लहसुन के सफेद सड़न रोग से बचने के लिए परामर्श

हाल ही के दिनों में हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में लहसुन की फसल पर एक बीमारी के लक्षण पाए गए। क्षेत्रों से मिली रिपोर्ट के आधार पर डॉ यशवंत सिंह परमार औदयानिकी एवं वानिकी, नौणी के औदयानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, थुनाग से डॉ राजीव और डॉ किशोर ने कटारसी, कुआ, कुठेड़, करशाला, फनोटी, बालू, बलेड़, जूड़, बनाला, लोट, करशैगड़ गाँव का दौरा किया और पाया कि यह बीमारी सफेद सड़न रोग है।

लक्षण एवं कारण

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को पता चला कि यह रोग संक्रमित कंदों के प्रयोग से शुरू होता है तथा बाद में खेत में स्थापित हो जाता है। संक्रमित पौधों के पत्ते पीले हो जाते हैं और आकार में छोटे रह जाते हैं तथा आसानी से उखड़ जाते हैं। इन संक्रमित कंदों को ध्यान से देखने पर एक सफेद और रोएंदार फफूंद का कवक जाल देखा जा सकता है। इस सफेद कवक जाल पर बहुत छोटे काले रंग के पोस्तदाने के आकार के सकलेरोशिया देखे जा सकते हैं। लहसुन को बार बार एक ही खेत में लगाने से और मध्यम तापमान तथा मिट्टी में अधिक नमी इस रोग के विकास के लिए अनुकूल हैं।

वैज्ञानिकों ने पाया कि इस रोग का खेत में अधिक संक्रमण होने की अवस्था में संक्रमित पौधों का उपचार संभव नहीं हैं परंतु अगले वर्ष के लिए इस रोग के निदान हेतु किसानों को निम्नलिखित परामर्श दिए जाते हैं।

परामर्श

फसल के अवशेषों को एकत्रित कर नष्ट कर दें। साथ ही सुझाव दिया गया कि बार बार प्याज वर्गीय कंद फसलें एक ही खेत में न लगाएँ और 3 -4 वर्ष के लिए फसल चक्र अपनाएं। लहसुन के बाद खेत में धान, मक्की व गोभी वर्गीय फसलें लगाएँ। इसके अतिरिक्त खेत में उचित जल निकासी का प्रबंध करें। खेत में बुआई से पहले जैविक संशोधन अथवा जैविक फफूंद ट्राइकोडर्मा (2.5 कि ग्रा/ 50 कि॰ ग्रा॰ गोबर खाद/ हेक्टेयर) आदि मिलाएँ। रोपण के समय केवल स्वस्थ कलियों का इस्तेमाल करें और इनका ट्राइकोडर्मा (10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज) द्वारा उपचार करें।